अध्याय 43

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा. प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

2.	**आराधना** (20मिनट) *[परमेश्वर की विशेषताएं]* **परमेश्वर रक्षक है।**

इस अध्याय में हम परमेश्वर को धन्यवाद देने के द्वारा अपनी आराधना को ज़ाहिर करना सीखते हैं।
भजन 107:1-9, 10-16,17-22 को **पढ़ें।**
परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को जवाब देता, चमत्कार करता, हमें भली बातें सिखाता और बहुत से सबक सिखाता है।
परमेश्वर के द्वारा उत्तर दी गयी किसी प्रार्थना पर; आपके जीवन में परमेश्वर द्वारा किये गये चमत्कार पर ;या उस सबक पर **ध्यान दें** जिसे परमेश्वर ने आपको सिखाया हो।
आराधना। ऊपर दी गयी बातों में से किसी बात के लिए समय निकालकर एक या दो पक्तियों में परमेश्वर का धन्यवाद दें। (उदाहरण के लिए: क. उसने आपको जीवन साथी दिया.ख. उसने आपके जीवन को बचाया ग. उसने आपको आत्म सम्मान प्रदान किया (यशायाह 43:4) घ. उसने आपको अपने शत्रुओं को क्षमा करने के योग्य बनाया।)

3	**बाँटें** (20 मिनट) [शान्त समय] एस्तेर 2,3,4,5

आपने जो कुछ दिये गये बाइबल अनुच्छेद (उत्पत्ति 12:1–15:21) से अपने शान्त समय में सीखा है उसे संक्षेप में **बाँटें या (अपनी कॉपी में से पढ़ें)।**
बताने वाले व्यक्ति की बातों को ध्यान से सुने, उसे गम्भीरता से लें और स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4	**शिक्षा** (70 मिनट) [प्रभुता] **परमेश्वर की इच्छा को खोजना**

" आप अपने जीवन के लिए परमेश्वर की योजनाओं को किस तरह अनुभव कर सकते हैं"
"आपके जीवन के लिए परमेश्वर की योजनाओं के तहत उसका चरित्र किस प्रकार से जुड़ा हुआ है"।
"परमेश्वर की इच्छा को जानने के प्रमुख सिद्धान्त क्या है,जिसके आधार पर आप अपने जीवन में निर्णय ले सके या चुनाव कर सकें?"
"क्या परमेश्वर आपको चुनाव करने की स्वतन्त्रता देते हैं या नहीं?"

क. परमेश्वर की योजनाए या उसकी इच्छा उसके चरित्र से जुड़ी होती हैं।

1. परमेश्वर की योजना या उसकी इच्छा।

इफिसियों 1:11 में लिखा है "उसी में जिसमें हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है,पहले से ठहराए जाकर मीरास बने।" परमेश्वर की योजनाओं में क्या क्या शामिल होता है? सम्पूर्ण सृष्टि और सम्पूर्ण इतिहास के लिए परमेश्वर की योजना में प्रत्येक व्यक्ति के प्रति उसकी योजना शामिल है।
-परमेश्वर की योजना सिद्ध रूप में आपके अनोखे व्यक्तिक्त का निर्माण व उसके अलंकृत करती है।
-परमेश्वर द्वारा निर्धारित उसकी योजनाएं आपके जीवन में सही समय पर निश्चित रूप में पूरी होती हैं।
-परमेश्वर की योजना में आपके जीवन में उसके द्वारा अनुमति प्राप्त परिस्थितियां तथा साथ ही साथ आपके लिए प्रगट किया जाने वाला मार्गदर्शन शामिल है।

परमेश्वर की योजना सब लोगों के लिए उपयुक्त व सिद्ध है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति और उसके लिए परमेश्वर की योजना का बीज एक साथ परमेश्वर के मन मं धारित हुआ था। (यशायाह 43:7)

2. परमेश्वर का चरित्र।

आपके जीवन में उसकी योजना को पूर्ण करने के लिए परमेश्वर के चरित्र को जानना कितना जरूरी है?

परमेश्वर अनुग्रहकारी, तरस खाने वाला, विलम्ब से क्रोध करने वाला,प्रेम का धनी व अपनी सारी सृष्टि के लिए भला है।

अत: जितना ज्यादा आप परमेश्वर को जानते हैं, उतना ही आप उस पर, आपके जीवन के लिए उसकी योजनाओं तथा उसकी प्रतिज्ञाओं पर भरोसा कर सकते हैं (भजन संहिता 145:8-9; 23:1-6)।

परमेश्वर सच्चा है और जो कहता है वह करता है।

इस लिए, जितना ज्यादा आप परमेश्वर की सच्चाई को जानते हैं(परमेश्वर क्या कहते हैं), उतना ही अच्छी तरह से आप उसकी इच्छा या उसकी योजना को जान पाएंगे। परमेश्वर सर्वप्रथम अपनी सच्चाई को सबसे पहले लिखित बाइबल में फिर उसकी पवित्र आत्मा द्वारा प्रगट करते हैं, जो बाइबल की सच्चाई को आपके मन,हृदय और जीवन में लागू करता है (गिनती 23:19; यूहन्ना 14:16-17, 26; 16:8,13-14;17:17)

3. परमेश्वर का प्रकाशन ।

परमेश्वर अपनी सृष्टि और हर जीवन से अति विशाल है। परमेश्वर ने अपनी सम्पूर्ण इच्छा या योजनाओं को लोगों पर प्रगट नहीं किया है। परमेश्वर ने जो मनुष्यों पर प्रगट किया है, वह परमेश्वर के मार्गदर्शन में प्रगट किये जाने वाले उसके विशेष व सामान्य निर्देश हैं।

परमेश्वर की प्रगट इच्छा का उद्देश्य ।

भजन 32:8 **पढ़ें।** परमेश्वर ने आपका मार्गदर्शन करने की प्रतिज्ञा की है।

यूहन्ना 14:21,23 में **पढ़ें।** परमेश्वर ने इस मकसद से अपनी इच्छा को जाहिर किया है कि आप उसकी आज्ञा माने और मसीह के साथ एक धनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करें। इसलिए आपकों सदैव परमेश्वर की प्रगट इच्छा को जानने हेतू प्रयत्न करते रहना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 29:29; यशायाह 55:8-11 **पढ़ें।** लेकिन आपको परमेश्वर की गुप्त (छुपी हुई)इच्छा से या उन परिस्थितियों से डरने की आवश्यकता नही है जिसके द्वारा परमेश्वर आपका मार्गदर्शन करता है। परमेश्वर के चरित्र को याद रखें।

रोमियों 8:28 **पढ़ें।** परमेश्वर की गुप्त इच्छा (तथा अवर्णित परिस्थितियों)का उद्देश्य भी आपकी भलाई ही है। स्मरण रखें कि परमेश्वर अपने ज्ञान,शक्ति और प्रेम में सर्वश्रेष्ठ है।

परमेश्वर के विशेष निर्देशों के उदाहरण।

परमेश्वर द्वारा बाइबल में विशेष आज्ञाओं, निषेध बातों और शिक्षाओं के प्रति की जानी मांगें।

उदाहरण के लिए:

- निर्गमन 20:12 पढ़ें। परमेश्वर लोगों को अपने माता पिता का आदर करने की आज्ञा देते हैं।
- निर्गमन 20:14 पढ़ें। परमेश्वर ने यौन सम्बन्धी अनैतिकता को निषेधित किया है।
- मत्ती 6:14-15 पढ़ें। परमेश्वर लोगों को एक दूसरे को क्षमा करने की शिक्षा देते हैं।

परमेश्वर क सामान्य निर्देशों के उदाहरण

बाइबल में सामान्य निर्देश व सिद्धान्त उन बातों से सम्बन्ध रखते हैं जिन क्षेत्रों के बारे में आपको पहले सोच विचार करना चाहिए और बाद में उन्हीं विचारों के आधार पर निर्णय करना चाहिए।

उदाहरण के लिए:

- इफिसियों 5:10, 15-16 **पढ़ें।** आपको विचार करना चाहिए कि कौन सी बातें परमेश्वर को पसन्द आती हैं और कौन सी बातें नहीं।
- रोमियो 14:19 **पढ़ें।** आपको विचार करना चाहिए कि एक बुद्धिमान व्यक्ति के समान किस प्रकार जीवन व्यतीत किया जाता है।

- 1 कुरिन्थियों 10:23 **पढ़ें।** या आपको विचार करना होगा कि कौन से व्यवहार वास्तव में लाभदायक और निर्माणकारी हैं।

ख. अपनी इच्छा के सम्बन्ध में परमेश्वर के विशेष निर्देश

परमेश्वर ने अपनी इच्छा के प्रकाशन के रूप में तथा एक मागदर्शक या मानचित्र के रूप में बाइबल को प्रदान किया है ताकि आपको चलने का मार्ग दिखाया जा सके। परमेश्वर के प्रकाशन का एक भाग विशेष आज्ञाओं, निषेधाज्ञाओं और शिक्षाओं से भरा हुआ है। किसी भी क्षेत्र में परमेश्वर की इच्छा को जानने के लिए, पहले आपको उन विशेष आज्ञाओं, निषेधाज्ञाओं और किसी विषय पर पूछी गयी शिक्षाओं पर विचार करना चाहिए।

1. जिस विषय पर आपकों चिन्ता है उस विषय पर परमेश्वर बाइबल विशेष तौर क्या कहते हैं?(2तीमुथियुस 3:16-17)

बाइबल की कौन सी आज्ञा, निषेधाज्ञा, या बाइबल की शिक्षा आपके ध्यान आकर्षित करने वाले क्षेत्र में लागू होती है? इस विषय पर जितना सम्भव हो सकें जानकारियां हासिल करने की प्रयास करें। बाइबल का अर्थ सही तरीके से निकाले(2 तीमुथीयुस 2:15)।

2. कौन सा अनुच्छेद या बाइबल की प्रतिज्ञा मुझे बाद में प्रेरित करती है?(भजन 119:130)

अपने शान्त समय या बाइबल अध्ययन के समय में अपेक्षा करें कि परमेश्वर आपसे बातचीत करे। सुनिश्चित करें कि आपके काम पूरी तरह से निम्न बातों से मेल खाते हों:

- उन बातों से जो बाइबल के अनुच्छेद में परमेश्वर कहना चाहते हैं
- उस अनुच्छेद में ज़ोर दी जाने वाली बातों से
- तथा बाकि बाइबल में पायी जाने वाली शिक्षाओं से।

3. किस हद तक मैं अपने जीवन में परमेश्वर की प्रगट इच्छा का पालन कर रहा हूँ?(नीतिवचन 1:22-33)

यदि आप पहले से ही ज्ञात परमेश्वर की इच्छा को अस्वीकार कर रहे हैं, तो आप परमेश्वर से उन बातों को प्रगट करने की आशा नहीं कर सकते जिन्हें आप अभी तक नहीं जानते हैं?

4. क्या मैं परमेश्वर किसी भी इच्छा को पूरा करने के लिए इच्छुक हूँ? (लूका 6:46-49)

परमेश्वर न केवल आपसे यह चाहते हैं कि आप उसके वचनों को सुने, वरन उन वचनों के अनुसार अपने जीवन को व्यतीत करें। आप अपने जीवन के लिए परमेश्व की योजना को लेकर उससे मोल भाव नहीं कर सकते हैं।

ग. परमेश्वर की इच्छा के सन्दर्भ में उसके सामान्य निर्देश।

बाइबल का पाये जाने वाले परमेश्वर के प्रकाशन के दूसरे भाग में सामान्य निर्देश या मार्गदर्शन करने वाले सिद्धान्त पाये जाते हैं। जब आप किसी विशेष क्षेत्र या विषय पर परमेश्वर की इच्छा को जानना चाहते हैं और उस विषय पर कोई आज्ञा या निषेधाज्ञा या बाइबल में कोई शिक्षा नहीं दी गयी हो, तो आपको परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए सात निदेर्शों या मार्गदर्शन करने वाले सिद्धान्तों पर आधारित होकर एक बुद्धिमानी भरा निर्णय लेना चाहिए।

1. एक बुद्धिपूर्ण निर्णय लें या चुनाव करें।

परमेश्वर ने मसीहियों को अपनी इच्छा के अनुसार काम करने की पर्याप्त स्वतन्त्रता प्रदान की है। लेकिन जीवन को सम्पूर्ण बनाने के लिए कुछ आज्ञाएं, निषेधाज्ञाएं व शिक्षाएं दी गयी हैं। मसीहियों को निर्णय लेने या चुनाव करने की पर्याप्त स्वतन्त्रता प्रदान की गयी है।

(1) जिस विषय क बारे में मैं चिन्तन कर रहा हूँ, उस विषय पर क्या मुझे निर्णय लेने या चुनाव करने की मुझे आज़ादी है?या इस विषय से सम्बन्धित क्या कोई आज्ञा, निषेधाज्ञा, या शिक्षा प्रदान की गयी है।

ध्यान दें। यदि उस विशेष विषय से सम्बन्धित कोई आज्ञा, निषेधाज्ञा या शिक्षा प्रदान की गयी है, तो सबसे पहले आपको उस पर ध्यान देना चाहिए। लेकिन यदि कोई आज्ञा, निषेधाज्ञा या शिक्षा प्रदान नहीं की गयी है, तो आपको एक बुद्धिमानी का निर्णय लेने या चुनाव करने का पूरा अधिकार है।

बाइबल के निम्नलिखित उदाहरण हमें बताते हैं कि बहुत से चुनाव समान तौर पर परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं, जिसमें से मसीह लोग किसी का भी चुनाव कर सकते हैं: मसीही जन निम्नलिखित चुनाव करने के लिए स्वतन्त्र है:

- वे केवल सब्जियां खाने या सब प्रकार का भोजन खाने के लिए स्वतन्त्र हैं(रोमियों 14:1-4)।

- वे अगर चाहें तो किसी एक दिन को दूसरे से अधिक पवित्र मान सकते हैं या फिर सभी दिनों को एक सा सम्मान दे सकते हैं(रोमियो 14:5-6)
- वे विवाह करने या अविवाहित रहने के लिए स्वतन्त्र हैं(1 कुरिन्थियों 7:8-9,39)
- वे यह निर्णय लेने के लिए स्वतन्त्र है कितना और किसे वे अपना उपहार प्रदान करें(2 कुरिन्थियों 9:6-7)
- निश्चय ही, मसीहियों की स्वतन्त्रता का पैमाना बाइबल की शिक्षाएं हैं।

(2) बुद्धि के कौन कौन से स्रोत हैं?

ध्यान दें। परमेश्वर बुद्धि के द्वारा ही मसीहियों का मार्गदर्शन करते हैं। बुद्धि के स्रोत परमेश्वर के वचन हैं(भजन 119:97-100),परमेश्वर का आत्मा (यशायाह11:2), प्राथना(याकूब 1:5),सलाहकार (नीतिवचन11:14)और अनुसंधान (नहेमायाह 2)। बुद्धि से पूर्ण निर्णय लेने के लिए,मसीहियों को निम्नलिखित प्रश्न पूछने चाहिए।

(3) मैं जिस विषय पर चिन्तन कर रहा हूँ,उसके लिए क्या अच्छा और क्या बेहतर है?

1 कुरिन्थियों 7:1,9 **पढ**।

ध्यान दें। यद्यपि कुछ अच्छा हो, मगर यह जरूरी नहीं है कि वह ही आपके या किसी और के लिए सर्वोत्तम है?

(4) जिस बात के बारे में मैं चिन्तन कर रहा हूँ उसमें क्या बातें परेशानी उत्पन्न करती हैं और किन बातों से आनन्द या शान्ति मिलती है?

1 कुरिन्थियों 7:28,40; रोमियों 14:19 **पढ**।

ध्यान दें। हो सकता है कि कुछ बातों को करने की अनुमति प्रदान की गयी है लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि वह कभी दिक्कत या परेशानी नहीं देगी। कई बार उस मार्ग को चुनना बुद्धिमानी ठहरता है जिससे शान्ति मिलती है लेकिन कई बार बुद्धिमानी से पूर्ण निर्णय लेने पर दिक्कतें व परेशानियां सामने आती ह।

(5) जिस बात के बारे में मैं चिन्तन कर रहा हूँ उसके सन्दर्भ में कौन सी बात अनुमति प्राप्त है और कौन सी बात फायदेमन्द या निर्माणकारी है?

1 कुरिन्थियों 10:23 **पढ़ें।**

ध्यान दें। यद्यपि कुछ बातों को अनुमति प्राप्त हो लेकिन ऐसा जरूरी नहीं है वह आपके या दूसरों के लिए फायदेमन्द या निर्माणकारी हो।

(6) जिस बात के बारे में मैं चिन्तन कर रहा हूँ उसके सन्दर्भ में क्या उचित है और क्या ज़रूरी है?

1 कुरिन्थियों 16:4; 2 कुरिन्थियों 9:5।

ध्यान दें। यद्यपि कुछ बातों को अनुमति प्राप्त हो लेकिन ऐसा ज़रूरी नहीं है कि वह उचित या जरूरी भी हो!

ईश्वरीय बुद्धि ज़्यादातर सारे विकल्पों को खत्म करके केवल एक ही मार्ग छोड़ती है। जब वह काम करती है, तो परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला एक ही चुनाव रह जाता है। जब एक से ज़्यादा चुनाव बुद्धि पूर्ण होते हैं(समान रूप से फायदेमन्द व निर्माणकार, अच्छे व ज़रूरी) तब सभी चुनाव समान रूप से परमेश्वर के सामने ग्रहणयोग्य होते हैं। उसकी श्रेष्ठता आपकी ऊँचाई की ओर अगुवाई करेगी(नीतिवचन 16:33, रूत 2)

2. बुद्धिमान लोगों व माता पिता से सलाह लें।

परमेश्वर ने समाज में आपको सलाह देने व आपकी परवाह करने के लिए भाई बहन और कुछ बुद्धिमान लोगों को रखा है। परमेश्वर उन लोगों को सावधान करता है जो आत्मनिर्भर व दूसरों से अलग रहते हैं(यशायाह 30:1-2)।

(1) ईश्वरीय या परिपक्व मसीहियों की सलाह और अन्य बुद्धिमान लोगों की सलाह क्या होती है? (नीतिवचन 15:22)

ध्यान दें। जितने ज़्यादा सलाहकार आपके पास होगें उतने ही ज़्यादा पहलुओं पर आप गौर कर पाएंगे। आपका सलाहकार जितना ज्यादा आपको व आपकी परिस्थितियों को जानता होगा उतना ही ज़्यादा सिद्ध उनकी सलाह भी होगी(नीतिवचन 27:23)।

आत्मिक व नैतिक मामलों में सलाह देने के लिए आपके मसीही होने चाहिए, क्योंकि अविश्वासियों में मसीह का मन नहीं होता(1 कुरिन्थियों 2:12-16)। उन्हें समझदार होना बहुत जरूरी है, क्योंकि नासमझ लोगों को शैतानी व ईश्वरीय कामों में से भले की पहिचान नहीं होती(इब्रा 5:14), क्योंकि परमेश्वर बुराई करने वालों की प्रार्थनाओं को नहीं सुनता(1 पतरस 3:12)। दूसरे मामलों में भी आपके सलाहकार बुद्धिमान व जानकार मसीही होने चाहिए(नीतिवचन 14:7)।

(2) अगर मैं अभी युवक ही हूँ तो मेरे माता पिता की मेरे प्रति क्या सलाह होगी?(नीतिवचन 1:8-9)

ध्यान दें। जब तक आप उम्र में छोटे होते हैं तब तक परमेश्वर आपको व्यस्क जीवन हेतू तैयार करने के लिए आपके माता पिता का इस्तेमाल करता है। लेकिन अगर आपके माता पिता की सलाह परमेश्वर की आज्ञाओं या शिक्षाओं के विरूद्ध हो तो आप उन शिक्षाओं को प्रेम से अस्वीकृत कर सकते हैं। (मत्ती 10:37; प्रेरितों 5:29)।

(3) क्या मैं उन सलाहों को नज़रअन्दाज़ कर रहा हूँ जिन पर मुझे ध्यान देन चाहिए? (नीतिवचन 19:20-21)

3. अपनी योग्यताओं व अपनी मंजिल पर ध्यान दें।

परमेश्वर ने आपको किसी विशेष उददेश्य के लिए एक विशेष व्यक्तित्व के साथ बनाया है।

(1) कौन सी प्राकृतिक योग्यता और आत्मिक वरदान परमेश्वर ने मुझे दिया है,वह किस तरह से मेरे जीवन हेतू बनायो गयी उसकी योजना के लिए इनका इस्तेमाल करना चाहता ह?(1 कुरिन्थियों 12:4-6)

ध्यान दें। परमेश्वर आपका रचयिता और पुन: रचना करने वाला है और उसी ने आपको प्राकृतिक योग्यताएं और आत्मिक वरदान प्रदान किये हैं ताकि आप उसकी योजना के अनुसार जीवन व्यतीत कर सकें। आपकी योग्यताएं व सीमाएं एक संकेतक के समान हैं जो बताती हैं कि परमेश्वर आपसे किस प्रकार का जीवन व्यतीत करवाना चाहता है।

(2) जिस बात के बारे में मैं चिन्तन कर रहा हूँ उसके सन्दर्भ में कौन सी बात मेरे व्यक्तित्व के विकास में और मेरे काम को पूरा करने में सहायता करती है या उसमें बाधा डालती हैं।

ध्यान दें। आपके व्यक्तित्व में आपका विश्वास, प्राथमिकताएं, आपकी भावनाएं और व्यवहार शामिल है (2 कुरिन्थियों 13:10)। आपके लक्ष्यों को अर्थ है आपके रोजमर्रा के काम, आपके जीवन के अल्पकालीन या दीर्घकालीन कार्य,परमेश्वर की ओर से बुलाहट या परमेश्वर की आर से दिये गये काम(प्रेरितों 20:24)।कई निर्णय या चुनाव जिन्हें आप अपने जीवन में लेते हैं आपके चरित्र को बिगाड़ देते हैं, आपके व्यक्तित्व को नुकसान पहुँचा सकते वरन आपके लक्ष्य को भी प्रभावित कर सकते हैं। केवल उन्हीं निर्णयों और चयनों पर ही ध्यान दें जो आपके चरित्र का निर्माण करें,आपके व्यक्तित्व को विकसित करें और आपके लक्ष्य को पूरा करें।

जिन रिश्तों या गतिविधियों का आपकी जिन्दगी पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है उन्हें आपने तुरन्त अपने जीवन से दूर कर देना चाहिए(भजन 1:1; नीतिवचन 1:10,15; 2 कुरिन्थियों 6:14-7:1)। अत: आपको उन रिश्तों और गतिविधियों की खोज करनी चाहिए जो आपको प्रेम व भले काम करने की प्रेरणा देते हैं(इब्रानियों 10:24-25)।

(3) परमेश्वर मुझे पहले किन कामों को करने का अनुरोध करता है? (मत्ती 6:33)

ध्यान दें। किस काम के लिए परमेश्वर आपके मन में आपातकालीन परिस्थिति जैसा बोध उत्पन्न कर रहा है? जीवन में सभी बातें समान रूप में महत्वपूर्ण नहीं होतीं। ऐसी बातों में अपना 90% समय व्यर्थ न करें जिससे केवल आपको 10% फल ही प्राप्त होगा। बल्कि ऐसे कामों को करने में अपने समय और प्रयासों को खर्च करें जो हमेशा अटल बने रहेंगे। सामान्यत: सबसे जरूरी काम को सबसे पहले करें, लेकिन उसके साथ साथ कम जरूरी कामों के लिए समय निकालें।

4. तथ्यों व परिस्थितियों पर ध्यान दें।

परमेश्वर आपके जीवन हर परिस्थिति और स्थानों पर प्रधान है(प्रेरितों 17:24)।

(1) क्या मैंन पर्याप्त मात्रा में उस विषय पर खोज कर ली या मुद्दे से जुड़े मूल तथ्यों को इकट्ठा कर लिया है जिसके विषय में मैं चिन्तन कर रहा हूँ? (नीतिवचन 25:2; नहेमायाह अध्याय2)।

ध्यान दें। मसीहियों को दूसरों से तथ्यों की तलाश और अच्छी बातों को सीखते रहना चाहिए, जिनमें गैर मसीही लोग भी शामिल हैं। उदाहरण के लिए, जब आप किसी नौकरी को ढूंढ़ते हैं, अलग अलग कम्पनियों को पत्र लिखें व और निम्नलिखित जानकारियां प्राप्त करने करें।

- आपका काम क्या होगा, नौकरी की अवधि, कार्य समय, कार्य स्थल और काम करने की शर्तें।
- नौकरी से रिश्ता,अधिकारियों की संरचना,किसके द्वारा निरीक्षण होगा, किसका निरीक्षण करने की जिम्मेदारी मिल रही है।
- वेतन कितना होगा, फायदे क्या हैं, पदोन्नति की क्या सम्भावनाएं हैं।
- मुझे किस तरह से आदर व सराहना मिलेगी।
- दूसरे लाग इस नौकरी या काम को किस नज़रिये से देखते हैं?

(2) परमेश्वर ने किस हद तक भविष्य की बातों को देखते हुए परिस्थितियों व घटनाओं को स्पष्ट तौर पर एक ही दिशा में नियोजित किया है।

ध्यान दें। क्या परिस्थितियां भी आपको भी उसी दिशा में अगुवाई करती हैं जैसे इस अध्ययन के दूसरे सिद्धान्त अगुवाई करते हैं?

(3) क्या मेरा विवेक इस बात के प्रति साफ है कि मैंने अपने लिए माहौल तैयार करने का प्रयास नहीं किया है? (प्रेरितों 24:16)

(4) अगर मैं अपने जीवन में बाधाओं का सामना करता हूँ, तो क्या वे परमेश्वर की ओर से मुझे रोकने के लिए आती है (प्रेरितों 16:6-10), या वे शैतान की ओर से आती है जिस पर मुझे विश्वास के द्वारा जय प्राप्त करनी है?(थिस्लुनिकियों 2:18)।

ध्यान दें। इस शिक्षा के सारे सिद्धान्तों पर ध्यान देने के बाद ही परमेश्वर के सारे लक्ष्य स्पष्ट हो पाते हैं। लेकिन शैतान की सम्भव युक्तियों व उसके उद्देश्यों को अपने ध्यान में रखिये। विशेष तौर पर प्रार्थना कीजिए, क्योंकि बाधा का प्रश्न विकासशील चरित्र का प्रश्न हो सकता है या फिर आत्मिक युद्ध का प्रश्न हो सकता है।

(5) विचारों और भावनाओं पर ध्यान दें।

परमेश्वर ने आपको अपने सम्पूर्ण मन से और अपने पूर्ण हृदय से प्रेम करने की आज्ञा दी है(मरकुस 12:30, 1 कुरिन्थियों 2:16; फिलिप्पियों 2:5)।

(1) मेरे व्यक्तिगत उद्देश्य, इच्छाएं व भावनाएं क्या हैं?
और मेरी सामान्य चेतना मुझसे क्या कहती है? (1 इतिहास 28:9; भजन 37:4-6)।

उदाहरण के लिए कुछ ऐसी बातों पर ध्यान करो: स्वार्थी आकाक्षां का पीछा करना, लोगों से सराहना पाने का प्रयास करना, धन की चाह करना,शक्ति व प्रसिद्धि या किसी के द्वारा किये गये अन्याय के प्रति कड़वाहट महसूस करना। तथा इन बातों पर ध्यान देना: विश्वास में बढ़ने के लिए दूसरों की मदद करना और फलदायक मेहनत करना। इनमें से कौन सी इच्छाएं व भावनाएं परमेश्वर की ओर से आने वाली प्रतीत होती हैं? और कौन सी बात गलत निर्णय लेने में उकसाने वाला प्रलोभन या कम बेहतर चुनाव प्रतीत होता है? इनके लिए प्रार्थना करें।

(2)मेरे निर्णय के कारण जो लोग प्रभावित होंगे उनके लक्ष्य, इच्छाएं और भावनाएं क्या होंगी?(फिलिप्पियों 2:3-4)।

ध्यान दें। आप जिस मुद्दे पर चिन्तन कर रहें हैं वह आपके बच्चों व जीवन साथी पर किस प्रकार प्रभाव डालेगा? परमेश्वर की निगाहां में, आपका पत्नि और आपके बच्चे आपके सभी निर्णयों में बहुत महत्वपूर्ण हैं(व्यवस्थाविवरण 24:5; मत्ती 19:5-6; 1 कुरिन्थियों 9:5; 1 तीमुथीयुस 3:2,4-5)

(3) इस शिक्षा के सभी सिद्धान्तों पर मनन करने के बाद,क्या मैं अपने भीतर शान्ति को और इस बोध को महसूस कर रहा हूँ कि परमेश्वर मेरी अगुवाई कर रहे हैं? या मुझे असहजता, बेचैनी, आन्तरिक अशान्ति या अव्यवस्था का आभास हो रहा है?(यशायाह 32:17)

ध्यान दें। गौर करें कि यह शान्ति:

- क्या यह केवल आपके कामों को सही साबित करने वाला भाव ही तो नहीं है जिससे कारण आपको निर्णय लेने के बाद आपको भय से, आशंका से और संघर्ष से मुक्ति का एहसास हो रहा हो।
- या इस शान्ति के भीतर कहीं परमेश्वर पर व उसके वचनों द्वारा अगुवाई का शान्त आत्मविश्वास छुपा महसूस होता है, चाहें कोई सम्भव अनिश्चितता या बदलाव ही क्यों न सामने प्रगट हो जाए।

6. समय और विश्वास का ध्यान रखें।

परमेश्वर ने आपको अपने हर एक जरूरी काम को करने के लिए पर्याप्त समय दिया है। सभोपदेशक 8:5-6 में हम देखते हैं,"बुद्धिमान का मन समय और न्याय का भेद जानता है, क्योंकि हर एक विषय का समय और नियम होता है।"

(1) क्या मेरी अभिलाषाएं व भावनाएं मुझे जल्दी आगे बढ़ने के लिए धकेल रही हैं? (नीतिवचन 19:2)।

ध्यान दें। स्वार्थी महत्वाकाक्षाएं, अपवित्र लालसा, संयम का अभाव, अति आत्मविश्वास,घमण्ड,क्रोध, बदला और धैर्यहीनता जैसी बहुत सी बातें आप से बहुत सी गलतियां करा सकती हैं। अत: जल्दबाजी में कोई कदम न उठाए और न ही कोई निर्णय लें।

(2) क्या मेरी अभिलाषाओं और भावनाओं के कारण मैं काम करने में बहुत देरी करता हूँ?(इफिसियों 5:15-16)।

पक्के सबूत, अपना फायदा, अपनी सुरक्षा का इन्तज़ार करना तथा विश्वास का अभाव व भय आपको सुन्दर अवसरों से वंचित कर सकता है। इसलिए किसी काम को टालें नहीं।

(3) क्या मैं मुख्य मुद्दों को पहिचानने के लिए आत्मिक रूप से परिपक्व हूँ? या फिर मुझे बढ़ने के लिए और अधिक समय देना चाहिए, ताकि मैं इस तरह मुख्य निर्णय लेने के काबिल बन जाऊँ?(इब्रानियों 5:14)

ध्यान दें। हो सकता है कि किसी व्यक्ति के किसी निर्णय या चयन को मान्यता दे दी गयी हो, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि वह व्यक्ति सदैव निर्णय लेने के लिए पर्याप्त मात्रा में परिपक्व है।

(4) क्या परमेश्वर मुझसे चाहता है कि मैं विश्वास के अनुसार ही चलूं या वह फिर वह विश्वास के द्वारा काम करने से रोकता भी है?(इब्रानियों 11:6)

ध्यान दें। आप अभी तक पूरी तरह शुद्ध नहीं हुए हैं और अभी तक आपकी समझ सीमित है। गलतियां करना तो मानवीय स्वभाव है और उन गलतियों को मान लेना विनम्रता है। यदि आप किसी बात को पूरी तरह परमेश्वर की इच्छा मान लेते हैं,तो आपको विश्वास के साथ उस काम को करना चाहिए। लेकिन कई बार वह निर्णय गलत साबित होता है, तब आपको परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए के वह परिस्थिति नियन्त्रण ले और उस निर्णय के कारण आप पर व दूसरों पर होने वाले प्रभाव को संभाले। परमेश्वर सर्वश्रेष्ठ है। हर समय और हर बात में परमेश्वर को प्रेम करने वाले लोगों के लिए सब बातें मिलकर भलाई को उत्पन्न करती हैं (रोमियों 8:28)।

7. प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा की प्रेरणा के प्रति संवेदन शील रहें।

परमेश्वर ने प्रार्थना के द्वारा उस तक पहुचने का सीधा मार्ग दिया है (इफिसियों 3:12; इब्रानियों 4:16)

(1) क्या मैंने इस अध्याय से सारे सिद्धान्तों से प्राप्त जानकारी को लेकर पर्याप्त मात्रा में प्रार्थना की है?(फिलिप्पियों 4:6)

ध्यान दें। अपने सारे निवेदनों को परमेश्वर के सामने ला कर रख दें। अपना हृदय खोलकर अपने सारे लक्ष्यों, इच्छाओं और भावनाओं को परमेश्वर के सामने रख दें। तब तक प्रार्थना में लगें रहें जब तक कि आपको पता न चल जाए कि आपको क्या करना है। जब आप किसी खास बात के लिए प्रार्थना करते हैं तो क्या आपको लगातार प्रार्थना करने की आज़ादी महसूस होती है?

परमेश्वर की आप तक सीधी पहुंच है और उसने आपको पवित्र आत्मा एक प्रतिनिधित्व व सलाहकार के रूप में दिया है जो आपकी सब प्रकार के सत्य में,पापों के प्रति निरूत्तर करने में, आपको सारी बाते सिखाने तथा आपको परमेश्वर का वचन याद दिलाने में मदद करता है(यूहन्ना 14:26; 16:8,13-14)।

(2)क्या पवित्र आत्मा आपको किसी काम को करने के लिए प्रेरित करता है(प्रेरितों 11:12) या किसी काम को करने से आपको दूर रखता है?(प्रेरितों 16:7)?

ध्यान दें। पवित्र आत्मा जो भी कुछ आपकी मन या हृदय में बोलता है वह बात कभी भी बाइबल में लिखित बात को विरोध नहीं करेगी(इफिसियों 6:17)! आपको दुष्टात्मा और मसीह की आवाज़ में फर्क करना आना चाहिए(यशायाह 8:19-20, रोमियों 10:17; 1 यूहन्ना 4:1)।

घ. परमेश्वर की इच्छा को खोजने में आपकी ज़िम्मेदारी

परमेश्वर निश्चय ही मसीहियों का मार्गदर्शन करना चाहता है। वह प्रतिज्ञा करता है,"जिस मार्ग में तुझे चलना होगा उस में तेरी अगुवाई करूँगा; मैं तुझ पर कृपा दृष्टि रखूँगा और सम्मति दिया करूँगा"(भजन 32:8)। लेकिन मसीही लोग निश्चित तौर पर यह खोजने के लिए ज़िम्मेदार हैं कि परमेश्वर को क्या भाता है(इफिसियों 5:10)और परमेश्वर की क्या इच्छा है(इफिसियों 5:17)।

1. मसीह क समानता में और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाली बातों का चुनाव करें।

रोमियों 12:1 व फिलिप्पियों 2:3-7; लूका 2:46-52; लूका 14:10-14 **पढ़ें।**

खोजें व चर्चा करें। किस प्रकार के त्याग से भरे हुए निर्णय मसीह के समान व परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले हैं?

ध्यान दें।

- अपना फायदा देखने की बजाय आपको दूसरों को फायदा देखना चाहिए(फिलिप्पियों 2:3-4)
- अपने परिवार की कुर्बानी चढ़ाकर अपनी जिन्दगी बनाने के बजाय, अपने आप को पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए सौंपें। (1 तीमुथीयुस 3:4-5)।
- धर्मी,शक्तिशाली व प्रतिष्ठित लोगों के उपकार चुकाने की बजाय गरीब, विकलांग और जीवन से परेशान लोगों को अपने पास बुलाएं(लूका 14:12-14)।

2. परमेश्वर के सामान्य व विशेष वचनों के आधार पर बुद्धि से पूर्ण निर्णयों को लें।

मसीहियों को उन मुद्दों पर सबसे पहले परमेश्वर की विशेष आज्ञा, निषेधाज्ञा और शिक्षाओं पर ध्यान देना चाहिए जिस पर वे मनन कर रहे हैं। अगर उन्हें कोई विशेष आज्ञा, निषेधाज्ञा और शिक्षाएं नहीं मिलती हैं तो मसीहियों परमेश्वर के मार्गदर्शन के अनुसार सात सामान्य निर्देशों का पालन करना चाहिए।

(1) जानकारियां इकट्ठा करें। बाइबल से प्राप्त विशेष या सामान्य जानकारियां को जो आपको मिली हैं, उन्हें लिख लें। बाइबल से किसी खास मार्गदर्शन के तलाश करते समय जो विचार परमेश्वर आपके मन में डालता है या परमेश्वर के वचन से

आपको कोई सामान्य निर्देश प्राप्त होता है तो आप उन्हें लिख लें। अपने विचारों को निम्नलिखित तीन कॉलम में व्यवस्थित कर लें।

सकारात्मक तथ्य और फायदे	नकारात्मक तथ्य व उनके नुकसान	अन्य विकल्प
. . . . . .	. . . . . .	. . . . . .

(2) प्रतीक्षा करें । यदि प्रमाण अभी भी अनिर्णायक हैं, तो आपको प्रतीक्षा करने, अधिक जानकारी इकट्ठा करने व प्रार्थना करने की जरूरत है।

(3) बुद्धिमान बनें। यदि मुद्दा भावनात्मक है, जैसे कि किसी पुरूष का किसी स्त्री से मिलना, विवाह,बिमारी से चंगाई, किसी धार्मिक सभा में भाग लेना इत्यादि, तो आप विषयपरक सिद्धान्तों अर्थात विशेष आज्ञाओं, निषेधाज्ञाओं और परमेश्वर के वचन की शिक्षाओं और समझदार मसीहियों की सलाहों को ज्यादा महत्व दें।

(4) सही अर्थ समझें। केवल बाइबल के उन्हीं वचनों पर निर्भर न रहें जो आपको अच्छे लगते हैं परन्तु बाइबल के वचनों को सही सही इस्तेमाल करें(2 तीमुथीयुस 2:15)।

(5) निर्णय लें और काम करें। यदि सारे प्रमाण एक ही ओर ईशारा कर रहे हों, तब एक जिम्मेदार निर्णय लें और विश्वास के अनुसार काम करना शुरू कर दें।

(6) भरोसा करें। अगर बाद में आगे बढ़ना काफी कठिन जान पड़े तब," अन्धकार में परमेश्वर की उन बातों पर शंका न करें जो परमेश्वर ने आपसे उजियाले में कहीं थीं"।

(3) परमेश्वर की इच्छा पर चलने की शर्त को पूरा करें।

खोजें व चर्चा करें। परमेश्वर की इच्छा को मालूम करने व उस पर चलने की क्या शर्त है?

(1) परमेश्वर के साथ मे व्यक्तिगत व घनिष्ठ सम्बन्ध बनाने का प्रयास करें(यूहन्ना 15:5)

(2) बाइबल में पायी जानी वाली परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए तत्पर रहें। (लूका 6:46-49; फिलिप्पियों 4:9)

(3) परमेश्वर की गुप्त व श्रेष्ठ इच्छा के प्रति समर्पित रहें जिसे परमेश्वर ने आपकी परिस्थिति में प्रगट किया है(रोमियों 8:28)

(4) अपने मन के बदल जाने से लगातार तुम्हारा मन भी बदलता चला जाए। (रोमियों 12:2; फिलिप्पियों 4:8)

एक तरफ आपको, इस संसार की चमक दमक को या जीवन के गलत दबाब को आपके जीवन को आकार देने की अनुमति प्रदान नहीं करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, ध्यान रखें कि आपके मुंह से कोई गलत या अभद्र भाषा न निकले। अश्लील गाने गाने या ठोकर खिलाने वाले संगीत सुनने से बचें। अश्लील पुस्तकें या पत्रिकाएं न पढ़ें। ध्यान दें कि आपके वस्त्र भड़काऊ तो नहीं हैं। आपत्तिजन गतिविधियों में शामिल होने से बचें। सासांरिक लोगों के साथ धनिष्ठ सम्बन्ध बनाने से बचें।

दूसरी ओर, आपको बाइबल पढ़ने, परमेश्वर के आत्मा की बातों को मानने, मसीहियों के साथ संगति करने के द्वारा अपने मन को नया करना और अपने आचरण को बदलते रहना चाहिए।

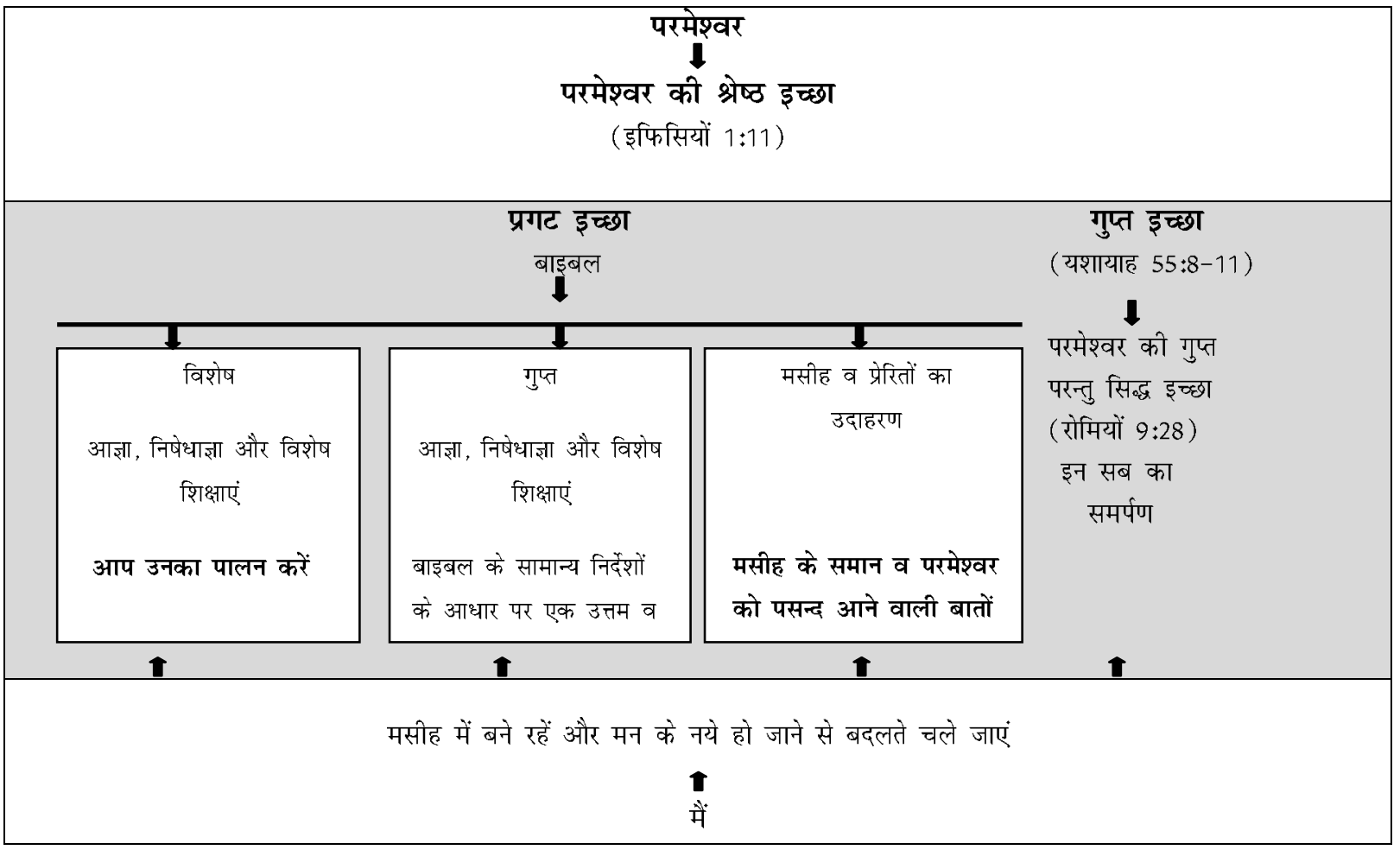
ड़. परमेश्वर की इच्छा का संक्षिप्त वर्णन

सिखाएं। परमेश्वर की अगुवाई और निर्णय लेने के सिद्धान्तों को सार:

1. बाइबल में जहां पर भी आपको विशेष आज्ञा, निषेधाज्ञा और विशेष शिक्षा मिले, आप उनका पालन करें।

2.जब बाइबल से कोई आज्ञा, निषेधाज्ञा व शिक्षा न मिले, तो उस समय पर आपको बाइबल के सामान्य निर्देशों के आधार पर एक उत्तम व बुद्धिमानी से भरा हुआ निर्णय लेना चाहिए। या आप बाइबल में किसी अच्छे उदाहरण का अनुसरण कर सकते हैं।

3.आपको अपना सब कुछ परमेश्वर के सर्वश्रेष्ठ हाथों में सौंप देना चाहिए, इसका अर्थ है कि आप उसकी सिद्ध व गुप्त इच्छाओं के प्रति समर्पण कर रहें हैं।



5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएं]*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज सीखी गयी शिक्षाओं की प्रतिक्रिया के रूप में अपने समूह में परमेश्वर से ***संक्षिप्त*** प्रार्थना करें।
या समूह को दो दो या तीन तीन में बाँट कर सीखी गयी बातों पर प्रतिक्रिया देते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

*(**समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ "परमेश्वर की इच्छा को खोजना" की शिक्षा के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें। परमेश्वर की इच्छा से सम्बन्धित 7 कदमों को याद करें। अपने जीवन की परिस्थिति में दिये गये सिद्धान्तों के अर्न्तगत दिये गये प्रश्नों का इस्तेमाल करते हुए निर्णय लें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: निर्गमन 6,7,8, व 9 के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. बाइबल अध्ययन । घर पर ही अगल बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। 1 परतरस 2:11-25 । विषय: संसार में कष्ट। बाइबल अध्ययन के पाँच कदमों वाले तरीके का इस्तेमाल करें। लेखा रखें ।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।